साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 49, नवम्बर(द्वितीय) , 2018

मनुष्य के सृजन में खुदा ने जिस द्रव्य का उपयोग किया,उसका नाम संभावना है

लेखक: पद्मश्री डॉ.गुणवंत शाह
अनुवादक: डॉ.रजनीकांत एस.शाह

भले ही शिखर को न छू सकें,परन्तु जितना ऊपर चढ़ सकें उतना भी जीवन को सार्थक करनेवाला है.
स्वयं कमजोर है,ऐसा कहना भी पाप है,क्योंकि उसमें संभावना नामक द्रव्य का अपमान है.

जीवनकाल के दरमियान मनुष्य एक भी ऐसी भूल नहीं करनेवाला,जिसे देवों ने नहीं की हो.भूल करना तो हमारा जन्मसिद्ध और जन्मसिद्ध अधिकार है.जो भूल करना मनुष्य के लिए संभव नहीं हो,ऐसी भूल वह करेगा कैसे? मनुष्य मात्र भूल के पात्र हो,तो वह भुल्लाहित जीवन व्यतीत करके मृत्यु को प्राप्त हो,क्या ऐसा संभव है?ना.ना,ना.

मनुष्य मात्र अधुरा है.अत: वह भूल किये बिना जी जाये,ऐसा संभव नहीं है.प्रत्येक ल उसे कुछ न कुछ सिखाती ही है.It is a learning experience.भूल जैसी अन्य कोई शिक्षिका पाना दुर्लभ है.अत: जोर से बोलिए: `भूलमाता की जय.' भूल किये बिना जी गया हो ऐसा कोई मनुष्य अभी तक पृथ्वी पर जन्मा नहीं है.भूलमाता इतनी तो उदार हैं कि वह आपको मिलने के लिए दूसरी और तीसरी बार भी मुस्कुराती हुई आयेगी. उस भूलमाता की प्रतीक्षा करना ही हमारा अधिकार है.हाँ,आप मनुष्य हैं,मशीन नहीं हैं.

आप मनुष्य हैं.
मनुष्य का सृजन करते समय
भगवान जिस द्रव्य का उपयोग करते हैं
उसका नाम संभावना है.
आप ऐसी कोई संभावना लेकर
जन्मे हैं,जो किसी और के पास नहीं है.
वह संभावना अनन्य और अद्वितीय है.
यदि आप जरा सी भी मेहनत करेंगे तो
आपको उसके संकेत अवश्य प्राप्त होंगे.

उस संभावना का संकेत
आपको प्राप्त हो उसके बाद
दुनिया की कोई ताकत
आपको संभावना के प्रदेश में
पंख फडफडाने से रोक नहीं सकती.
आप ऐसा दिव्य उडान भरें.
तब मित्र और स्वजन आपको
उन्नत ग्रीव फटी आँख से
देखते ही रह जायेंगे.
ऐसे वक्त आप उडान छोड़कर
नीचे धरती पर नहीं आ जाना.
आप केवल आपको प्राप्त संकेत के प्रति ही
वफादार रहें.
बस, उसके बाद तो
शेष कार्य इश्वर स्वयं सम्हाल लेंगे!

स्पेन का विख्यात चित्रकार अल ग्रेको अपने घर के सरे खिड़की-दरवाजे बंद करके बैठा हुआ था.घर के बहार वसंत खिली हुई थी.ऐसे में उसका कोई खास मित्र वहां जा पहुंचा. उसने चित्रकार मित्र से पूछा,:``बाहर ऐसी वसंतऋतु खिली हो,ऐसे में तुम घर के खिड़की-दरवाजे बंद करके क्यों बैठे हो?'' जवाब में उस महान कलाकार ने कहा:

`` मुझे खिड़की- दरवाजे खोलने नहीं हैं,
क्योंकि
भीतर का प्रकाश झलझला रहा है.
वह प्रकाश बाहर के प्रकाश से
अवरुद्ध हो,ऐसा मैं नहीं चाहता.''

ऐसे मौलिक जवाब के आगे मित्र विवश था.वह वहां से शांति से चल दिया.कलाकार के जवाब से उसे प्राप्त दिव्य रूकावट भी सबके भाग्य में नहीं होती.दिव्य खलल पाने का अवसर नरसिंह महेता के जीवन में दिखाई देता है.नागरीनात(ज्ञाति) ऐसे दिव्य खलल की अगुआई नहीं कर सकी, परन्तु भक्त नरसैया ने अपनी उडाड़न को छोड़ा नहीं,इस लिए हमें प्रभाती गीत प्राप्त हुए!ऐसे प्रभाती गीत गुजराती भाषा के अतिरिक्त और किसी भाषा के पास नहीं है.हम भी कैसे? ऐसी भाषा में पढ़ने की खू(आदत) भूला बैठे!

महाकवि डंडी कहते हैं: `` यदि शब्द का प्रकाश नहीं होता तो इस संसार में तीनों लोक अन्धकार में अंतर्लीन हो गया होता.'' गद्य के एक प्रकार को `उत्कलिकाप्राय' कहा है.वह ऐसा ललित गद्य है,जिसमें पद्य के अंश अत्यंत साहजिक रूप से गुम्फित हो जाते हैं.इसलिए कहा:``रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यं!

महाविज्ञानी आइन्स्टाइन के शब्द अब थोडा साहस बटोरकर दो बार पढेंगे? सुनिये:

अंतर्बोध से रसित मन
यह तो पवित्र भेंट है
और बुद्धिगम्यता से भरा हुआ मन तो
वफादार नौकर है.
हम ऐसे समाज की रचना कर बैठे हैं,
जो नौकर का आदर करता है
और भेंट को भूल जाता है!

मनुष्य जिससे निपट सकता है,उसके स्तर से मनुष्य पहुँच सके उसका स्तर तो ऊँचा ही रहेगा.बरसों पूर्व घर के ट्रांजिस्टर पर पाकिस्तान के रेडियो पर से शब्द सुनाई दिए थे:

`आदमी जैसे जैसे बुलंदी को छूता है,देखनेवालों के लिए छोटा सा बनता जाता है!'So enjoy your challenges. पर्वत है, तो उस पर होनेवाले आरोहण टालना नहीं चाहिए. भले ही शिखर को न छू सकें,परन्तु जितना ऊपर चढ़ सकें उतना भी जीवन को सार्थक करनेवाला है.स्वयं कमजोर है,ऐसा कहना भी पाप है,क्योंकि उसमें संभावना नामक द्रव्य का अपमान है. ईश्वर का यही अपमान माना जायेगा.

समझदारी:

गुजरात की परिसंपत्ति मानी जाये ऐसे ९४ वर्ष बीताकर अपना कर्मयोग जारी रखनेवाले श्री महेंद्र मेघाणीजी ने तारीख. १६-०२-२००९ के रोज मुझे एक पोस्टकार्ड लिखा.उसमें एक अवतरण लिखा:

मेरे आदर्शरूप गुणलक्षण
निर्दयता मुक्त सबलता,
गर्ववृत्ति रहित प्रामाणिकता,
अविचारीपन रहित हिम्मत,
हलकई रहित विनोदवृत्ति,

संवेदना रहित मानवता,
बेईमानी रहित बुद्धिमत्ता
शंकारहित संशयप्रीति.
-फ्रेडरिक फोर्सीथ

टिपण्णी:

पोस्टकार्ड के विनियोग द्वारा हजारों लोगों तक पहुँचने में महात्मा गाँधी के बाद पूज्य महेंद्र मेघाणीजी का नंबर अवश्य लगता है.अब तक मात्र मुझे ही १०० से भी अधिक पोस्टकार्ड लिखे जा चुके हैं.प्रत्येक पोस्टकार्ड सम्हालकर रखने जैसे कुछ शब्द लेकर मिलने के लिए आते हैं.अभी भी महेंद्रभाई `थकान' नामक शब्द के वश होना नहीं चाहते.उनकी आखिरी पुस्तक `आपणा गाँधीबापु' पढ़े बिना रहना खोट का काम है.अभी सौवाँ वर्ष दूर है.

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें